प्रातः क्लास 12-11-68 ओमशांति पिताश्री शिव बाबा याद है?

बेहद को बाप की याद में रहो और बेहद के सुखधाम की याद में रहो। (याद की यात्रा)

यह है प्रैक्टीकल में आत्मा और परमात्मा का मेला। जब तुम अपने सेन्टर पर रहते हो तो यह मेला नहीं है। दूर हैं ना। यहां तो तुम बाप के सम्मुख हो। आत्मायें और परमात्मा सम्मुख हैं। क्योंकि यहां परमपिता परमात्मा आत्माओं को पढ़ाते हैं। वहां आत्मायें आत्माओं को पढ़ाती हैं। यहां बाप बैठपढ़ाते हैं। बहुत फर्क रहता है। वहां तुम भाईयों के परिवार में हो। यहां बाप और बच्चे हैं। इसलिये मधुबन का गायन है। मधुबन में मुरली बजे। बच्चे यह भी जानते हैं कि मुरली मुख से बजती है। इसलिये गऊमुख पर जाते हैं यात्रा करने। काठ की मुरली नहीं बजती है। वह तो कुछ कोई भी बना सकते हैं। छोटे बच्चे भी बजाते हैं। यह तो है ज्ञान मुरली। ज्ञान से सदगति होती है। बाकी जो मनुष्यों की झूठी गीता सुनी है उनसे दुर्गति ही हुई है। और परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर से सुनाई हुई गीता से सदगति होती है। आधा कल्प दुर्गति आधा कल्प सदगति यह गीता के कारण ही होती है। तुमको बताना ही है गीता का कारण। बहुत बच्चे भूल भी करते हैं। क्लीयर नहीं दिखाते हैं। डरते हैं पता नहीं मनुष्य हंगामा न करें। क्योंकि मनुष्य जानवर बन्दर है ना तो गुर गुर करते रहते हैं।

हरेक बच्चे जानते हैं हम स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। स्वर्ग कैसा होगा वह भी बुधि में होना चाहिए। वहां कितनी शान्ति होगी। कैसे सुन्दर2 महल आदि बनेंगे भारत में। सभी कंचन ही कंचन होंगे। आत्मा भी कंचन तो शरीर भी कंचन रहता है। वह है ही कंचन दुनिया जिसको पारस दुनिया भी कहा जाता है। मनुष्यों की बुधि में भी कंचन बन जाती है। महल आदि कितने शोभनिक होंगे। चैतन्य देवतायें रहते होंगे। फिर मंदिर भी कितने शोभनिक बनते होंगे। हम तो बना न सकें। माइल भी नहीं [illegible] शान्त होंगी। सागर भी बहुत शान्त रहता है। इतने लहरें नहीं होती। सभी शीतल रहते हैं। तुम बच्चों की बुधि में होना चाहिए हम अपना पैराडाइज बना रहे हैं। यह भी बाप ने समझाया है कैसे तुमने अपना राज्यभाग्य गंवाया फिर लेते हो। रावण 5 विकारों ने तुम्हारा राज्य छीना है। इसमें लड़ाई आदि की कोई बात नहीं उठती। राज्य हराया भी बिगर लड़ाई की है। फिर जीत भी बिगर लड़ाई पाते हो। यह बेहद की बात है ना। 5 विकारों के कारण ही तुमने हार खाई है। फिर उन पर तुम जीत पाते हो। इसमें लड़ाई आदि का प्रश्न नहीं उठता। अब तुम रावण अर्थात 5 विकारों पर जीत पाने से तुम फिर से अपने स्वर्ग के मालिक बनते हो। बिगर कोई लड़ाई आदि के। सीढ़ी के चित्र में भी कोई लड़ाई झगड़ा है नहीं। गीता में फिर लड़ाई का मैदान दिखा दिया है वह तो है नहीं। राज्य भी तुम पढ़ाई से लेते हो। यह पाठशाला है ना। इसमें स्थूल मेहनत बिल्कुल नहीं है। बाप कहते हैं इन आंखों से जो कुछ देखते हो यह सभी विनाश होने की चीजें हैं। अभी तुमको त्रिनेत्री बनाया जाता। त्रिनेत्री बनने से तुम त्रिकालदर्शी बनते हो। त्रिकालदर्शी बनने से त्रिलोकी नाथ बन जाते हो। कृष्ण को त्रिलोकी नाथ कहते हैं। शिव को त्रिलोकी नाथ नहीं कहेंगे। हां वह नालेज देते हैं त्रिलोकी नाथ बनने की। त्रिलोकी नाथ, वैकुण्ठ नाथ यह भी टाईटल उनके हैं। अमरनाथ भी है। अमरपुरी में तुम जाते हो। वहां काल ना नहीं। यह सारी नालेज तुम बच्चों के मथन होनी चाहिए। स्टुडन्ट की बुधि में सारा दिन पढ़ाई रहती ना। तुम्हारी बुधि में भी सारी पढ़ाई है। उनकी है हद की, तुम्हारी है बेहद की पढ़ाई। वह भी स्टुडन्ट हैं तो भी स्टुडन्ट हो। यहां तो छोटे बच्चे, जवान बूढ़े आदि सभी इकट्ठे पढ़ते हैं। उन युनिवर्सिटी आदि में तो जवान ही पढ़ते हैं। क्रिमनल आई रहती है। तुमको जो ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है यह है सिवील आई। तुम आत्मायें भाई2 हैं। हम आत्माओं को बाप पढ़ा रहे हैं। वह शिव बाबा, बाबा भी है, नालेजफुल भी है, इसमें पढ़ाते भी हैं, सदगति भी सभी की कर देते हैं प्रैक्टीकल में। ऐसे नहीं शिव बाबा चला जावेगा। यह तो बैठे रहेंगे। दूसरा गुरु करना पड़ेगा। नहीं। गुरु की बरात होती ही नहीं। शिव की बारात गाई

है। तो जरूर कोई अर्थ होगा ना। बाप बैठ समझाते हैं हम पवित्र बनेंगे तो बाप के साथ जावेंगे। नहीं तो फिर सजा खानी पड़ेगी। बेहद के बाप से बेहद सुखऔर शान्ति का वरसा मिलता है। लौकिक बाप से तो मिल न सके। यह है ही बेहद की बात। तुमबेहद के बाप से पदमापदम भाग्यशाली बनते हो। सुख और शान्ति बेहद की मिलती हैं। फिर लिमिट है2। पीढ़ी। 2। जन्म नहीं। 2। पीढ़ी अर्थात बूढ़ोपे तक। वहां अकाले मृत्यु होती नहीं। यहां तो अचानक कोई मरता है, कुटुम्ब का कुटुम्ब भी सारा मर जाता है। एक्सीडेन्ट होता है तो सारा सारा कुटुम्ब मर पड़ता है। वहां यह बातें होती ही नहीं। सागर भी इतना लहराता नहीं जितना यहां लहराते हैं। तुम्हारी प्रकृति दासी बनती है। अभी तुम प्रकृति के दास हो। यहां तुम डायरेक्ट सुनते हो तो तुमको खुशी भी होती है, धारणा भी अच्छी होती है। परन्तु माया है ना। सेकण्ड में जीवनमुक्ति को उड़ा देती है। सेकण्ड में फट से तुम= जीवनमुक्ति तुमको मिलती है फिर भी माया की भी फूंक ऐसी लगती है जो फट से जीवनमुक्ति उड़ा देते हैं। निश्चय होने में बड़ी देरी नहीं लगती है फिर संशय होने में भी देरी नहीं लगती है। कोई न कोई संशय में आकर पढ़ाई छोड़ देते हैं। स्कूल में न आये, पढ़ाई छोड़ी तो गये। यहां है हनखन। माया के हाथ लगने से ही झट मुरझाये जाते हैं। एक छुई मुई बूटी भी होती है ना। उनको शर्म बूटी कहते हैं। हाथ लगाने से मुरझाये जाते हैं। बाप भी कहते हैं शर्म नहीं आता है बाबा के बनकर और फिर माया के बन जाते हो। ऐसे बाप को फारकती डाइवर्स दे देते हो। शर्म नहीं आता। जब कि बुधि की सगाई बाप से हुई है तो उनको याद करो ना। फिर दूसरे को क्यों याद करते हो। शर्म नहीं आता। क्रिमनल आई हो जाती हैं। सगाई अर्थात बुधि में शिव बाबा को याद। स्त्री पुरुष की भी ऐसी सगाई हो जाती है ना। याद ठहर जाती है। स्कूल में बच्चे बैरिस्टरी पढ़ते हैं तो गोया बैरिस्टर साथ सगाई हो जाती है। वह सभी हैं हद की सगाईयां। यह है बेहद की सगाई। बेहद के बाप से ही वरसा लेना है, उन स्टुडन्ट्स की है जिसमानी पढ़ाई। उन में ही विचार सागर मथन चलता रहता है। तुम्हारा हैरुहानी पढ़ाई। अच्छे स्टुडेन्ट जो होते हैं वह सदैव एकान्त में जाकर पढ़ते हैं। तुम्हारी भी पढ़ाई ऐसी है। स्टुडन्ट स्टुडन्ट में शोभते हैं। आपस में मिलते जुलते हैं। पढ़ाई पर ही वार्तालाप करते हैं इस बेहद की पढ़ाई में तो और ही खुशी से लग जाना चाहिए। और एमआबजेक्ट भी सामने खड़ा है। कोई का भी बाप नया महल बनाता है तो खुशी होती है, सभी को दिखलाते हैं हमारे कैसे बनवाता है। अन्य भी समझते हैं यह मेहनत कर बहुत अच्छा महल बनाते हैं। तुम बच्चे भी जानते हमारे महल आदि बहुत अच्छे बनेंगे। अभी सिर्फ उनका सा० होता है। जो स्वर्ग के मालिक हैं। आगे चल तुमको स्वर्ग भी देखने में आवेगा। आडिया मिलेगी हम ऐसे2 महल बनावेंगे। परन्तु वह भी फाईनल सा० उनको होगा जो विजय माला के दाना होंगे। महारथी होंगे। बाप दादा के दिल पर चढ़े हुये होंगे। बाबा यहां बैठता है तो कौन कौन याद आते हैं। जो सर्विसएबुल बच्चे हैं। कब अहमदाबाद कब बम्बई कब कलकत्ता चला जाता हूं। यहयह बच्चे बहुतअच्छी सीस करता हूं। लौकिक बाप को भी फर्स्ट क्लासबच्चे याद पड़ेंगे ना। जो आज्ञा ही नहीं मानते होंगे उनको थोड़ेही याद करेंगे। बेहद का बाप भी अच्छे2 फूलों को देखेंगे यह बड़ा अच्छा फूल है। बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। बाप के दिल पर चढ़े रहते हैं। देहअभिमान नहीं रहता। यहां सुख पाने का लालच न रहे। रहती। सुख पाने की प्रवाह ही नहीं रखते। देहीअभिमानी बड़े ही शान्त रहते हैं। कोई3 हेड ब्राह्मणियां यहां ही बड़ा आराम से रहती हैं। दास-दासियां रखती हैं, बिस्तरा बनाओ, चाय ले आओ यह करो। उनको बाबा देहअभिमानी समझते हैं। बाप जितना निरअंहकारी है। बच्चों को बड़ा2 म्युजियम मिल जाता है तो बस हुकुम चलाने शुरु कर देते हैं। जैसे रानी हंकर चलती हैं। बाप तो कहते हैं हम तुम्हारा बेस्ट औवीडियन्ट सर्वेन्ट हैं। तुम हमको पतित दुनिया में बुलाते हो। फिर कब पावनदुनिया में बुलाते हो? जो मैं आकर देखूं कैसे2 अच्छे महल में रहते हैं हो। मुझे निमंत्रण देते हो रानी दुनिया में। मैं तुम्हारा खुदा दोस्त हूं। उनको खुदा दोस्त अल्ला अवलदीन भी कहते हैं। दिखलाते हैं सच्चों को खुदा ने कौने के खजाने निकल आये। यह कहानी है। तुमको भी वैकुण्ठ का सा० होता है। बच्चों ने सभी [illegible] है। वहां कैसे स्वयंवर होती है। फिर बच्चे कैसे होते हैं। यह सभी सा० करते थे। अभी वह हैं नहीं।—

12-11-67

तो बाप समझाते हैं बच्चे पुरुषार्थ ऐसा करना है जो यह बन सको। जितना नजदीक आते जावेंगे तुम को सोने हीरों के महल चमकते हुये= हुये दिखाई पड़ेंगे। तुम बच्चे जानते हो हम अपने लिये ही श्रीमत पर राजाई स्थापन करते हैं। खुशी की बात है ना। यह है प्रैक्टीकल की बात। थ्योरिटीकल नहीं है। दिन प्रति दिन तुम बच्चों को खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिये। यह जानते हो ल०ना० जरूर नई दुनिया में होंगे। फिर दो कला होंगे तो न इतने नये महल होंगे न इतनी खुशी होगी। दो कला का फर्क हो जाता है। त्रेता को स्वर्ग नहीं कहेंगे। सतयुग को स्वर्ग त्रेता को सेमी स्वर्ग कहेंगे। द्वापर को नर्क नर्क कहेंगे। द्वापर में फिर भी अच्छे होते हैं कलियुग में तो और ही कला कम हो जाती है। अभी तो कलियुग का अन्त। इनको कुम्भी पाक नर्क कहा जाता है। रौरव नर्क कहा जाता। कुम्भकरण के नींद में रहने वाले असुर है ना। विकारियों को कहेंगे कुम्भी पाक नर्क में कुम्भकरण। कितना अच्छे2 नाम हैं। परन्तु मनुष्य समझते थोड़े ही हैं। इनको धन-दौलत बहुत हैं तो अपने को स्वर्ग में समझते हैं। हम तो समझते हैं यह सतयुग त्रेता में ही नहीं आवेंगे। फिर अन्त में आवेंगे। जो थोड़ा बहुत भी ज्ञान सुनते हैं वह आवेंगे जरूर। यह नालेज ही ऐसी मिलती है। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये पवित्र बनना है। और विचार सागर मन्थन करना है पढ़ाई में। अभी थोड़ा होता है। आगे चल जाती होता रहेगा। मौत भी होना है जरूर। फिर तुम्हारे में बहुत ताकत आवेगी। बहुत आकर बाप से वरसा लेंगे। बहुत मददगार बन जावेंगे। कोई जास्ती मदद करेंगे कोई थोड़ी। याद तो करेंगे ना। याद की यात्रा माना शान्ति स्थापन करने की यात्रा। इसलिये कहा जाता है हरेक घर पर बच्चे को स्वर्ग बनाओ यहां। वहां तो है ही स्वर्ग। कहने की दरकार ही नहीं। यहां कहा जाता है कि स्वर्ग बनाओ। हरेक की बुधि में अलफ और बेहद है। अलफ माना बाप। बच्चे= वे माना बादशाही। जो भी आये उनको यह समझाना है। अलफ बाबा अल्ला। बे माना बादशाही। अलफ को याद करो तो बादशाही मिलेगी। और कुछ भी कहने का नहीं है। सिर्फ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो राजाई तुम्हारी। तुम पैगम्बर बनते हो सभी को पैगाम देते रहो बाप को याद करो तो स्वर्ग के राजाई तुम्हारी। पैगाम पहुंचावेंगे भी वह जो पूरे निश्चय बुधि होंगे। और बहुत खुशी चढ़ी हुई होगी। बैज में भी दो अक्षर है। शिव बाबा को याद करने से बनना है। बस। फिर 84 जन्मों बाद आकर यह बनेंगे। कितना अच्छा है। यह इनको याद कर ॥ यह बनते हैं वह फिर पुनर्जन्म लेते2 यह बनते हैं। अभी हम सो यह बन रहे हैं फिर हम सो 84 जन्मों बाद यह बनेंगे। यह चित्र न होता तो समझाना थोड़ा मुश्किल होता। बाप ब्रह्म द्वारा सभी शास्त्रों का सार बताते हैं। तो फिर ब्रह्मा के हाथ में शास्त्र दे दिया है। शिव बाबा को उड़ा देते। यह तो कहते नहीं कि मैं सुनाता हूं। इन द्वारा बाप सुनाते हैं। बाप कहते हैं इन यज्ञ तप आदि दान से मैं नहीं मिलता हूं। मुझे तो अपना समय पर आना पड़ता है। मनुष्य सुनते हैं पता नहीं किस रूप आवेगा। क्या कुत्ते के रूप में आवेगा। गाते भी हैं रथ तो जरूर मनुष्य का होगा ना। कुत्ते में कैसे आवेगा। जैसे गली जनावर हैं। बाप कहते हैं तुम जंली जनावर थे ना। बन्दर से भी बदतर थे। बाबा हां हम थे। अब बाप ने विकारों पर जीत पहनाते हैं। वह सभी हैं भक्ति मार्ग के शास्त्रों की बातें। बाप कहते हैं इन रावण पर जीत पाने से तुम देवता बन जावेंगे। वही मनुष्य देवता, फिर वही मनुष्य असुर बन पड़ते। यह ल०ना० ही 84 जन्म लेते2 यह बन्दर बन जावेंगे। यह भी अभी तुम जानते हो 84 जन्मों बाद बराबर हमारे मिसल सुन्दर बुधि बन जावेंगे। तुमको तो अभी ज्ञान है। सतयुग में यह ज्ञान नहीं होगा। बाप को भी वन्डरफुल कहते हैं। जो वन्डरफुल कल की स्थापना करते हैं। घड़ी2 बच्चे कहते हैं बाबा हम भूल जाते हैं। अरे बाप को क्यों भूलते हो। अपने को तो तुम आत्मा समझो। आत्मअभिमानी बनने में बहुत मेहनत करनी पड़ती है। नालेज में इतनी मेहनत नहीं लगती है। यह बाप भी है टीचर भी है सदगुरु भी है। अच्छा बाप को भूलते हो तो टीचर से तो याद करो तो बाप है। कितना सहज कर देते हैं। फिर भी बुधि में नहीं बैठता है। यह भी कहेंगे ड्रामा। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते